८. बातचीत

(पूरक पठन)

– *दुर्गाप्रसाद नौटियाल*

[प्रसिद्‌ध साहित्यकार शिवानी जी से दुर्गाप्रसाद नौटियाल की बातचीत]

दुर्गा प्र. नौटियाल: शिवानी जी, आपके बहुत पाठक आपका असली नाम नहीं जानते हैं । आपका असली नाम क्या है और आपने साहित्यिक उपनाम कब और क्यों रखा ?

शिवानी : मेरा नाम वैसे गौरा है । मैंने धर्मयुग में १९५१ में एक छोटी कहानी-'मैं मुर्गा हूँ' लिखी थी । उसमें शिवानी नाम दिया था । मुझे शांतिनिकेतन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के सान्निध्य में नौ वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है । बाँग्ला में 'गौरा' नाम तो लड़कों का होता है । बाँग्ला की एक पत्रिका थी-'सोनार बाँग्ला' । उसमें भी मैंने 'मारीचिका' नामक एक कहानी लिखी थी । उसमें भी गौरा नाम ही छपा था । 'गौरा' नाम छोड़कर साहित्यिक नाम 'शिवानी' रखने के पीछे कोई विशेष कारण नहीं है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: साहित्य में आप किस-किससे प्रभावित रही हैं और किसने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया ? यानी आपके लेखन पर किसकी सर्वाधिक छाप पड़ी है ?

शिवानी : मैंने बाँग्ला माध्यम से पढ़ा है । बाँग्ला के प्रायः सभी स्वनामधन्य लेखकों को मैंने पढ़ा है । अतएव उनका प्रभाव मेरी भाषा पर पड़ा है । भाषा की दृष्टि से बंकिम ने मुझे विशेष प्रभावित किया । मेरा जन्म गुजरात में हुआ था । मेरी माँ गुजराती एवं संस्कृत की विदुषी थीं । गुजराती साहित्य भी मैंने पढ़ा । उसका भी प्रभाव मेरे लेखन पर पड़ा । गुजरात में हमारा घर साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र था । मेरे पिता जी अंग्रेजी के विद्‌वान थे । 'एशिया' नामक अंग्रेजी मैगजीन में उनके लेख छपते थे । घर-परिवार में पठन-पाठन का वातावरण था । सच बात तो यह है कि बचपन से पढ़ने-लिखने के अलावा हमारा ध्यान किसी और बात की तरफ गया ही नहीं । बदलते हुए फैशन ने भी हमें आकृष्ट नहीं किया ।

परिचय

जन्म : १९४२, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)
मृत्यु : २००३, देहरादून (उत्तराखंड)
परिचय : दुर्गाप्रसाद नौटियाल जी सुप्रसिद्‌ध स्वतंत्रता सेनानी एवं वरिष्ठ पत्रकार के रूप में प्रसिद्‌ध हैं । राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ छपती रही हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'नीली छत्री', 'मेरे जीवन की सफलता के रहस्य', 'स्वर्ण भूमि की लोक कथाएँ', आदि । इनके अतिरिक्त विविध अनुवाद ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत साक्षात्कार में शिवानी जी के जन्म, शिक्षा, घर-परिवार आदि पर चर्चा की गई है । बातचीत के माध्यम से शिवानी जी के लेखन को प्रभावित करने वाली बातें, अर्थार्जन, लेखक एवं पाठक के बीच के संबंधों आदि का विशद विवेचन किया गया है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : साहित्यकार भोगे हुए सत्य के कंकाल पर कल्पना का हाड़-मांस चढ़ाकर उसमें शब्दों और शैली की साँस फूँककर पाठकों के समक्ष रोबोट नहीं, बल्कि एक जीवंत चरित्र पेश करने की कोशिश करता है । आपका इस संबंध में क्या कहना है ?

शिवानी : बिना यथार्थ के कोई भी रचना प्रभाव उत्पन्न करने वाली नहीं हो सकती । वह युग चला गया जब केवल काल्पनिक सुख का दृश्य दिखाकर आकृष्ट किया जाता रहा । आज यथार्थ इतना कठिन और संघर्षपूर्ण है कि यदि उसे कल्पना चित्रित करने की कोशिश करेंगे तो पाठक स्वीकार नहीं करेंगे । फिर जरूरी नहीं है कि आप हर यथार्थ को भोगें ही । सुनकर और देखकर भी आप उसे ज्यों-का-त्यों चित्रित कर सकते हैं ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : आप अपनी सर्वोत्तम कृति या रचना किसे मानती हैं ? क्या लेखक और पाठक की इस संबंध में अलग-अलग धारणाएँ हो सकती हैं ? आपकी क्या राय है ?

शिवानी : मेरे लिए यह कहना कठिन है कि मेरी कौन-सी रचना सर्वोत्तम है । जिस तरह किसी माँ के लिए उसके बच्चे समान रूप से प्रिय होते हैं; उसी प्रकार मुझे अपनी सभी कृतियाँ एक-सी प्रिय हैं । वैसे पाठकों ने अभी तक जिस कृति को सर्वाधिक सराहा है, वह है-'कृष्णकली' । फिर भी यदि आप प्रिय रचना कहकर मुझसे जानना चाहते हैं तो मैं यात्रा वृत्तांत 'चरैवेति' का नाम लूँगी । इसमें भारत से मास्को तक की यात्रा का विवरण है । मेरी प्रिय रचना यही है क्योंकि मैंने इसे अत्यधिक परिश्रम और ईमानदारी से लिखा है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : आपने किस अवस्था से लिखना शुरू किया ? पहली रचना कब और कहाँ छपी थी ? तब कैसा लगा था ? और अब ढेर सारा छपने पर कैसा लग रहा है ?

शिवानी : मेरी पहली रचना तब छपी जब मैं मात्र बारह वर्ष की थी । अल्मोड़ा से 'नटखट' नामक एक पत्रिका में पहली रचना छपी थी । उसके पश्चात मैं शांतिनिकेतन

मीरा बाई के भजन यू ट्यूब से सुनकर कक्षा में सुनाइए ।

चली गई । वहाँ हस्तलिखित पत्रिका निकलती थी । उसमें मेरी रचनाएँ नियमित रूप से छपती थीं । तब रचना छपने पर बहुत आनंद आता था। आज भी जब कोई रचना छपती है तो खुशी तो होती है । सच कहूँ मैं बिना लिखे रह नहीं सकती । फिर भले ही एक पंक्ति ही क्यों न लिखूँ, लेकिन प्रतिदिन लिखती अवश्य हूँ ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: आपके साहित्य सृजन का क्या उद्‌देश्य रहा है-लोक कल्याण, आत्मसुख जिसके अंतर्गत धन की प्राप्ति का लक्ष्य भी शामिल है या कुछ और ?

शिवानी : मैंने धनसंग्रह को कभी जीवन में प्रश्रय नहीं दिया। वैसे पैसा किसे अच्छा नहीं लगता, किंतु केवल पैसे के लिए ही मैंने साहित्य सृजन नहीं किया । मैं पेशेवर लेखिका हूँ । अपनी रचना का मूल्य चाहती हूँ । फिर एक बात साफ है कि कोई भी लेखक-लेखिका स्वांतः सुखाय ही नहीं लिखता। जो रचना जनसाधारण को ऊँचा नहीं उठाती, उसे सोचने-समझने के लिए विवश नहीं करती, मैं उसे साहित्य नहीं मानती । जो साहित्यकार समाज में व्याप्त विकृतियों पर प्रहार नहीं करता, उसका साहित्य सृजन किस काम का ? अस्तु, मैंने दोनों ही दृष्टियों से लिखा है । लेकिन एक बात जोर देकर कहना चाहूँगी कि मैंने साहित्य सृजन किया है, शब्दों का व्यापार नहीं किया और लेखन के बदले जो कुछ सहजता से मिल गया, उसे स्वीकार कर लिया।

दुर्गा प्र. नौटियाल: आपके पाठकों और खास तौर से समालोचकों का कहना है कि आपकी भाषा क्लिष्ट, संस्कृतनिष्ठ और सामाजिक होती है । वाक्यविन्यास इतने बड़े और जटिल होते हैं कि अर्धविरामों की भरमार के कारण अर्थ समझने के लिए मस्तिष्क पर काफी जोर डालना पड़ता है । इससे साहित्य रसानुभूति के आनंद में व्यवधान पड़ता है। क्या आप भी ऐसा महसूस करती हैं ?

शिवानी : आलोचकों ने मेरे साथ कभी न्याय नहीं किया । मैंने बचपन में 'अमरकोश' पढ़ा। संस्कृत पढ़ी। घर में माँ संस्कृत की विदुषी थीं और दादा जी संस्कृत के प्रकांड

पठनीय

दैनिक हिंदी अखबार में आने वाली पुस्तक समीक्षा आदि को पढ़िए तथा टिप्पणी तैयार कीजिए।

पंडित । दोनों का मुझपर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था । मैं शब्दकोश खोलकर नहीं लिखती। जो भाषा बोलती हूँ, वैसा ही लिखती हूँ। उसे बदल नहीं सकती । फिर जब कठिन शब्द भावों को संप्रेषित करने में सक्षम होते हैं और रचना का रसास्वादन करने में आनंद की अनुभूति होती है, तब मैं नहीं समझती कि जान-बूझकर सरल और अपेक्षाकृत कम प्रभावोत्पादक शब्दों को रखना कोई बुद्‌धिमत्ता है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: आपने अब तक काफी साहित्य रचा है । क्या आप इससे संतुष्ट हैं ?

शिवानी : जहाँ तक संतुष्ट होने का संबंध है, मैं समझती हूँ कि किसी को भी अपने लेखन से संतुष्ट नहीं होना चाहिए । मैं चाहती हूँ कि ऐसे लक्ष्य को सामने रखकर कुछ ऐसा लिखूँ कि जिस परिवेश को पाठक ने स्वयं भोगा है, उसे जीवंत कर दूँ । मुझे तब बहुत ही अच्छा लगता है जब कोई पाठक मुझे लिख भेजता है कि आपने अमुक-अमुक चरित्र का वास्तविक वर्णन किया है अथवा फलाँ-फलाँ चरित्र, लगता है, हमारे ही बीच है । लेकिन साथ ही मैं यह मानती हूँ कि लोकप्रिय होना न इतना आसान है और न ही उसे बनाए रखना आसान है । मैं गत पचास वर्षों से बराबर लिखती आ रही हूँ । पाठक मेरे लेखन को खूब सराह रहे हैं । मेरे असली आलोचक तो मेरे पाठक हैं, जिनसे मुझे प्रशंसा और स्नेह भरपूर मात्रा में मिलता रहा है । शायद यही कारण है कि मैं अब तक बराबर लिखती आई हूँ ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: क्या कभी आपको फिल्मों के लिए काम करने का ऑफर आया है ? आप उस दुनिया की तरफ क्यों नहीं गईं जबकि वहाँ पैसा भी काफी अच्छा है ?

शिवानी : बहुत आया । मेरी एक कहानी का तो फिल्म वालों ने सर्वनाश ही कर दिया । इसके अतिरिक्त 'सुरंगमा', 'रति विलाप', 'मेरा बेटा', 'तीसरा बेटा' पर भी सीरियल बन रहे हैं । इसके बाद मैंने फिल्मों के लिए रचना देना बंद कर दिया और भविष्य में भी फिल्मों

'लेखक विद्‌यालय के आँगन में' इस उपक्रम के अंतर्गत किसी परिचित रचनाकार का साक्षात्कार लीजिए ।

और दूरदर्शन के सीरियलों के लिए कहानी देने का मेरा कोई इरादा नहीं है । जो चीज को ही नष्ट कर दे, उस पैसे का क्या करना ?

दुर्गा प्र. नौटियाल : आपकी राय में साहित्यकार का समाज और अपने पाठकवर्ग के प्रति क्या दायित्व है ? आपने कैसे इस दायित्व का निर्वाह किया है ?

शिवानी : मैंने साहित्यकार के रूप में अपना दायित्व कहाँ तक निभाया, यह तो कहना कठिन है, लेकिन जहाँ तक साहित्यकार का संबंध है, मैं उसे राजनीतिज्ञ से अधिक महत्त्व देती हूँ क्योंकि कलम में वह ताकत है जो राजदंड में भी नहीं है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : आप लेखन कार्य कब करती हैं ? लिखने के लिए विशेष मूड बनाती हैं या किसी भी स्थिति में लिख सकती हैं ?

शिवानी : ईमानदारी से कहूँ तो मैं किसी भी स्थिति और परिस्थिति में लिख सकती हूँ । सब्जी छौंकते हुए भी लिख सकती हूँ और चाय की चुस्की लेते हुए भी लिख सकती हूँ । रात को ज्यादा लिखती हूँ, क्योंकि तब वातावरण शांत होता है, लेकिन यदि काम का भार पड़ जाता है तो दिन-रात किसी भी वक्त लिख लेती हूँ । 'कालिंदी' को मैंने रात में भी लिखा और दिन में भी । एकांत में लिखना मुझे अच्छा लगता है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : एक कहानी को आप कितनी बैठकों या सीटिंग में पूरा कर लेती हैं और लगातार कितनी देर तक लिखती हैं ?

शिवानी : पहले मैं मन में एक खाका बनाती हूँ । फिर उसे कागज पर उतारती हूँ । खाका बनाकर रफ लिखती हूँ । हमेशा हाथ से लिखती हूँ । यहाँ तक कि अंतिम आलेख तक भी हाथ से ही लिखकर छपने भेजती हूँ । एक कहानी लिखने में मुझे पंद्रह-बीस दिन लग जाते हैं । लिखास लगती है तो लिखती हूँ । मैंने दस-बारह सदस्यों के परिवार में भी लिखा है और जब बच्चे छोटे थे तब भी खूब लिखा ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : हिंदी का लेखक हमारे यहाँ अपेक्षाकृत अर्थाभाव का शिकार होता है । केवल लेखन के बल पर समाज में सम्मानजनक ढंग से जीवनयापन करना कल्पनातीत

लेखनीय

आपके द्‌वारा आँखों देखी किसी घटना/दुर्घटना का विवरण अपने शब्दों में लिखिए ।

है । यदि आप शुरू से केवल लेखन से जीविका अर्जित करतीं तो क्या अपने वर्तमान स्तर को बनाए रख सकती थीं ?

शिवानी : मैं अपने लेखन के बल पर ही जीवित हूँ और एकदम स्वावलंबी हूँ । मैं मानती हूँ कि कोई भी लेखक अपने लेखन के बल पर ही जीविका चलाकर सम्मानजनक ढंग से समाज में जीवनयापन कर सकता है बशर्ते उसकी कलम में दम हो ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : क्या आप एक समय एक ही रचना पर कार्य करती हैं या एकाधिक विषयों पर काम करती रहती हैं ?

शिवानी : मैं जब एक चीज पर लिखना शुरू करती हूँ तो उसे समाप्त करने के पश्चात ही दूसरी चीज लिखना शुरू करती हूँ । एक चीज समाप्त करने के बाद कुछ दिन तक कहानी उपन्यास नहीं, बल्कि निबंध अथवा लेख-आलेख आदि लिखती हूँ । मैं समझती हूँ कि एक समय में एक से अधिक रचनाओं पर काम करने से ध्यान बँट जाता है और रचना में वह खूबसूरती नहीं आ पाती जो कि आनी चाहिए ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : अक्सर व्यक्ति किसी घटना विशेष के कारण लेखक, कवि या साहित्य सर्जक बन जाते हैं । आपके लेखिका बनने के पीछे क्या कारण रहा है ?

शिवानी : जैसा कि मैं पहले कहती हूँ कि हमारे परिवार का वातावरण मेरे लेखिका बनने के सर्वथा उपयुक्त था । फिर मैं नौ वर्ष शांतिनिकेतन में गुरुदेव के संरक्षण में रही, इसका भी मुझपर प्रभाव पड़ा । लिखने के प्रति मेरा रुझान बचपन से ही था । यों कह सकते हैं कि मेरे अंदर लेखिका बनने का बीज मौजूद था और उपयुक्त वातावरण मिलने पर मैं लेखिका बन गई । मैं नहीं मानती कि कोई घटना से प्रभावित होकर लेखक बन सकता है । उदाहरण के लिए किसी प्रियजन की मृत्यु से दुखी होकर कोई संन्यासी तो बन सकता है, किंतु लेखक नहीं बन सकता ।

('एक थी रामरति' संग्रह से)

— ० —

शब्द संसार

प्रश्रय पुं.सं.(सं.) = सहारा, आश्रय

व्यवधान पुं.सं.(सं.) = रूकावट, बाधा

चुस्की स्त्री. सं.(हिं.) = सुरकने की क्रिया

रुझान पुं. सं.(हिं.) = झुकाव

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

शिवानी जी की भाषा की विशेषताएँ

(२) आकृति पूर्ण कीजिए :

शिवानी के लेखन को प्रभावित करने वाली भाषाएँ

-------- --------

(३) एक-दो शब्दों में उत्तर लिखिए :

१. शिवानी का वास्तविक नाम →

२. शिवानी की प्रिय रचना →

३. शिवानी की माता जी इन भाषाओं की विदुषी थीं →

४. पाठकों द्‌वारा शिवानी की सराहनीय कृति →

(४) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
धर्मयुग	______	मारिचिका
सोनार बाँग्ला	______	अंग्रेजी लेख
एशिया	______	पहली रचना
नटखट	______	मैं मुर्गा हूँ

(५) कारण लिखिए :

१. शिवानी जी लेखिका बन गईं ------

२. शिवानी जी को पाठकों से प्रशंसा प्राप्त हुई है ------

(६) लिखिए :

लेखिका ऐसे साहित्य को साहित्य नहीं मानती

-------- --------

(७) पाठ में प्रयुक्त शिवानी की रचनाओं के नामों की सूची तैयार कीजिए ।

(८) 'परिवेश का प्रभाव व्यक्तित्व पर होता है' आपके विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन 'जल है तो कल है' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

अपठित पद्यांश

अतिरिक्त अध्ययन हेतु

हम अनेकता में भी तो हैं एक ही
हर संकट में जीता सदा विवेक ही
कृति-आकृति-संस्कृति, भाषा के वास्ते
बने हुए हैं मिलते-जुलते रास्ते
आस्थाओं की टकराहट से लाभ क्या
मंजिल को हम देंगे भला जवाब क्या
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी
सर्जनरत हो आजादी के दिन जियो
श्रमकर्माओ ! रचनाकारो ! साथियो
शांति और संस्कृति की जो बहती स्वाधीना जाह्नवी
कोई रोके बलिदानी रंग घोल दो
रक्त चरित्रो ! भारत की जय बोल दो !

वीरेंद्र मिश्र

— ० —

दोस्त एक भी नहीं जहाँ पर, सौ-सौ दुश्मन जान के,
उस दुनिया में बड़ा कठिन है चलना सीना तान के ।
उखड़े-उखड़े आज दिख रहे हैं तुमको जो यार हम,
यह न समझ लेना जीवन का दाँव गए हैं हार हम !
वही स्वप्न नयनों में, मन में वही अडिग विश्वास है,
खो बैठे हैं किंतु अचानक अपना ही आधार हम !
इस दुनिया में जहाँ लोग हैं बड़े आन के बान के,
हम तो देख रहे हैं तेवर दो दिन के मेहमान के ।
डगमग अपने चरण स्वयं ही, इतना हमको ज्ञान है,
निज मस्तक की सीमा से भी अपनी कुछ पहचान है,

भगवतीचरण वर्मा

— ० —

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर हैं,
सूर्य चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकार हैं ।
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडल हैं,
बंदीजन खग-वृंद शेष-फन सिंहासन हैं ।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की,
हे मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की ।
जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं ।
परमहंस-सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण 'धूलि भरे हीरे' कहलाए ।

मैथिलीशरण गुप्त

— ० —

7IN984